विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

भूमिका i - vi

विषयचयन

विषय का महत्त्व

सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण

विषय परिसीमन

विषयानुक्रम

आभार ज्ञापन vii

पहला अध्याय : राजी सेठ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1 - 24

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म एवं परिवार

1.1.2 शिक्षा एवं व्यवसाय

1.1.3 सामाजिक विचारधारा

1.1.4 राजनीतिक विचारधारा

1.1.5 धार्मिक विचारधारा

1.1.6 पुरस्कार एवं सम्मान

1.2 कृतित्व

1.2.1 कहानी साहित्य

1.2.1.1 अंधे मोड़ से आगे

1.2.1.2 तीसरी हथेली

1.2.1.3 यात्रा मुक्त

1.2.1.4 दूसरे देशकाल में

1.2.1.5 यह कहानी नहीं

1.2.1.6 गमे हयात ने मारा

1.2.1.7 खाली लिफाफा

1.2.2 उपन्यास साहित्य

1.2.1.1 तत-सम
1.2.2.2 निष्कवच
1.2.3 अनुदित साहित्य
1.2.4 अन्य साहित्य

दूसरा अध्याय : कथ्य एवं शिल्प का सैद्धांतिक विश्लेषण 25 - 55
2.1 कथ्य : सैद्धांतिक विश्लेषण
2.1.1 कथ्य की सामान्य अवधारणा
2.1.2 कथ्य का अर्थ
2.1.3 कथ्य की परिभाषा
2.1.4 कथ्य का स्वरूप
2.1.5 कहानी और कथ्य
2.1.6 उपन्यास और कथ्य
2.2 शिल्प : सैद्धांतिक विवेचन
2.2.1 शिल्प की सामान्य अवधारणा
2.2.2 शिल्प का अर्थ
2.2.3 शिल्प की परिभाषा
2.2.4 शिल्प का स्वरूप
2.2.5 शिल्प के तत्त्व

तीसरा अध्याय : राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त कथ्य का सामाजिक एवं धार्मिक सन्दर्भ 56 - 161
3.1 समाज : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
3.1.1 साहित्य और समाज
3.1.2 पारिवारिक संबंध
3.1.2.1 पति-पत्नी संबंध
3.1.2.2 सास-बहू संबंध
3.1.2.3 बहन-भाई संबंध
3.1.2.4 माँ-बेटा संबंध

3.1.2.5 पिता-पुत्र संबंध
3.1.3 सामाजिक समस्यसएं
3.1.3.1 अमीर-गरीब की समस्या
3.1.3.2 नारी शोषण की समस्या
3.1.3.4 अवैध सम्बन्धों की समस्या
3.2 धर्म : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
3.2.1 धर्म एवं समाज
3.2.1.1 परम्परागत धार्मिक मान्यताएं
3.2.1.2 आस्तिकता, पूजा-पाठ
3.2.1.3 अन्धविश्वास एवं धार्मिक रूढ़ियां
3.2.1.4 धर्म, पाप एवं पुण्य की अवधारणा

चौथा अध्याय : राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त कथ्य का आर्थिक तथा राजनीतिक सन्दर्भ 162 - 242

4.1 अर्थ : परिभाषा एवं स्वरूप
4.1.1 अर्थ और समाज
4.1.2 दैन्य दृष्यों का चित्रण
4.1.3 प्रलोभन
4.1.4 महत्त्वाकांक्षा
4.1.5 आर्थिक वैषम्य
4.2 आर्थिक समस्याएं
4.2.1 आर्थिक पराधीनता एवं नारी शोषण
4.2.2 बेरोज़गारी
4.2.3 दुर्व्यवहार
4.2.4 गरीबी
4.3 राजनीतिक सन्दर्भ
4.3.1 कथा-साहित्य में चित्रित राजनीतिक वातावरण
4.3.2 भ्रष्टाचार
4.3.3 शिक्षा एवं राजनीतिक व्यवस्था

4.3.4 नारी और राजनीतिक व्यवस्था
4.3.5 नारी जागरण और अधिकारों के लिए संघर्ष
4.3.6 लालच
4.3.7 अस्थिरता
4.3.8 काला बाज़ारी
4.3.9 अनैतिकता

पाँचवाँ अध्याय: राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त कथ्य का सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ 243 - 320

5.1 संस्कृति: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
5.1.1 संस्कृति और साहित्य
5.1.2 संस्कृति और समाज
5.1.3 संस्कृति: आन्तरिक पक्ष
5.1.3.1 करुणा
5.1.3.2 ममता
5.1.3.3 सहनशीलता
5.1.3.4 परोपकार
5.1.4 संस्कृति: बाह्य पक्ष
5.1.4.1 वेश-भूषा
5.1.4.2 खान-पान
5.1.4.3 रीति-रिवाज़
5.1.4.4 रहन-सहन
5.1.4.5 जीवन सघर्ष एवं सांस्कृतिक मूल्यों का बदलता स्वरूप
5.2 मनोविज्ञान: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
5.3 मनोविज्ञान एवं साहित्य
5.4 मानवीय एवं मूल्यों का विघटन
5.4.1 घुटन
5.4.2 अलगाव
5.4.3 निराशा

5.4.4 विवशता
5.4.5 अन्तर्द्वन्द्व
5.4.6 कुण्ठा
5.4.7 सम्बन्धों में घात-प्रतिघात
5.4.8 अनैतिकता

छठा अध्याय : राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त शिल्प 321 - 371

6.1 राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त शिल्प
6.1.1 भाषा
6.1.1.1 शब्द प्रयोग
6.1.1.1.1 तत्सम शब्द
6.1.1.1.2 तद्भव शब्द
6.1.1.1.3 स्थानीय शब्दावली
6.1.1.1.4 अंग्रेजी शब्द
6.1.1.1.5 ग्रामीण शब्द
6.1.1.1.6 पंजाबी शब्द
6.1.2 वाक्य
6.1.3 संवाद
6.1.4 लोकोक्तियाँ
6.1.5 मुहावरे
6.2 राजी सेठ के कथा-साहित्य में व्यक्त शैली
6.2.1 आत्मकथात्मक शैली
6.2.2 विवरणात्मक शैली
6.2.3 सांकेतिक शैली
6.2.4 प्रतीकात्मक शैली
6.2.5 चित्रात्मक शैली
6.2.6 बिम्बात्मक शैली
6.2.7 एक कथा की अन्तर्गत अन्य कथाओं का नियोजन

6.2.8 पूर्वादीप्ति शैली
6.2.9 पत्रात्मक शैली और डायरी शैली
उपसंहार 372 - 383
सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची 384 - 397